माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान (BSER) कक्षा 12वीं के हिंदी अनिवार्य पाठ्यक्रम के लिए **'शब्द-शक्ति'** विषय के विस्तृत और परीक्षा उपयोगी नोट्स यहाँ दिए गए हैं:

शब्द-शक्ति (Power of Words)

परिभाषा: शब्द के अर्थ का बोध कराने वाली शक्ति को **'शब्द-शक्ति'** कहते हैं। सरल शब्दों में, शब्द और अर्थ के बीच जो संबंध होता है, उसे शब्द-शक्ति कहते हैं। किसी शब्द को पढ़ते या सुनते ही हमारे मस्तिष्क में जो भाव उत्पन्न होता है, वह इसी शक्ति के कारण होता है।

व्याकरण के अनुसार शब्द तीन प्रकार के होते हैं और उनके अर्थ भी तीन प्रकार के होते हैं:

1. **वाचक शब्द:** इसका अर्थ 'वाच्यार्थ' (मुख्य अर्थ) कहलाता है।
2. **लक्षक शब्द:** इसका अर्थ 'लक्ष्यार्थ' (लक्षण आधारित अर्थ) कहलाता है।
3. **व्यंजक शब्द:** इसका अर्थ 'व्यंग्यार्थ' (ध्वनित होने वाला अर्थ) कहलाता है।

शब्द-शक्ति के प्रकार

मुख्य रूप से शब्द-शक्ति के **तीन** भेद होते हैं:

1. अभिधा शब्द-शक्ति (Abhidha)

जब किसी शब्द को पढ़ते या सुनते ही उसका **मुख्य या प्रसिद्ध अर्थ** तुरंत समझ में आ जाए, तो वहां 'अभिधा' शब्द-शक्ति होती है। इसमें शब्द का सीधा और सरल अर्थ लिया जाता है।

- **विशेषता:** यह शब्द की सबसे सरल और प्राथमिक शक्ति है। इसमें कोई घुमाव-फिराव नहीं होता।
- **उदाहरण:** "गाय घास चर रही है।"
- **व्याख्या:** यहाँ 'गाय' शब्द सुनते ही हमारे मन में एक विशेष पशु की आकृति आती है, जो इसका लोक-प्रसिद्ध अर्थ है।

---

2. लक्षणा शब्द-शक्ति (Lakshana)

जब शब्द के मुख्य अर्थ (वाच्यार्थ) में बाधा उत्पन्न हो और किसी अन्य अर्थ (लक्षणों) के आधार पर अर्थ ग्रहण किया जाए, तो वहां 'लक्षणा' शब्द-शक्ति होती है।

- **विशेषता:** मुख्य अर्थ काम नहीं करता, बल्कि व्यक्ति या वस्तु के **गुणों या लक्षणों** पर ध्यान दिया जाता है।
- **उदाहरण:** "राम तो गधा है।"
- **व्याख्या:** यहाँ 'गधा' का अर्थ चार पैरों वाला पशु नहीं है (बाधा), बल्कि राम की 'मूर्खता' के लक्षणों के आधार पर उसे गधा कहा गया है।

लक्षणा के दो मुख्य भेद:

1. **रूढ़ा लक्षणा:** जब परंपरा या रूढ़ि के कारण अर्थ लिया जाए। (उदाहरण: "भारत जाग उठा।")
2. **प्रयोजनवती लक्षणा:** जब किसी विशेष उद्देश्य (प्रयोजन) के लिए लक्षण का प्रयोग हो। (उदाहरण: "वह तो कोरी गंगा है।" - यानी बहुत पवित्र है)।

---

3. व्यंजना शब्द-शक्ति (Vyanjana)

जब शब्द का अर्थ न तो अभिधा (मुख्य अर्थ) से निकले और न ही लक्षणा (लक्षण) से, बल्कि प्रसंग के अनुसार **नया और अलग अर्थ** निकले, तो वहां 'व्यंजना' शब्द-शक्ति होती है।

- **विशेषता:** इसका अर्थ सुनने वाले की परिस्थिति और संदर्भ पर निर्भर करता है।
- **उदाहरण:** "संध्या हो गई।"
- **व्याख्या:** इस एक वाक्य के अलग-अलग लोगों के लिए अलग अर्थ हो सकते हैं:
    - पुजारी के लिए - "आरती का समय हो गया।"
    - मजदूर के लिए - "काम बंद करने का समय हो गया।"
    - गृहणी के लिए - "दीपक जलाने का समय हो गया।"

व्यंजना के दो मुख्य भेद:

1. **शाब्दी व्यंजना:** जहाँ व्यंग्यार्थ किसी विशेष शब्द पर टिका हो (शब्द बदलने पर अर्थ बदल जाए)।
2. **आर्थी व्यंजना:** जहाँ व्यंग्यार्थ अर्थ पर आधारित हो (शब्द बदलने पर भी अर्थ वही रहे)।

परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण तुलनात्मक उदाहरण

वाक्य	शब्द-शक्ति	कारण
"शेर जंगल में रहता है।"	**अभिधा**	यहाँ शेर का अर्थ वास्तविक जानवर है।
"महाराणा प्रताप मेवाड़ के शेर थे।"	**लक्षणा**	यहाँ शेर का अर्थ महाराणा प्रताप की 'वीरता' के लक्षण हैं।
"अंधेरा हो गया।"	**व्यंजना**	यहाँ संदर्भ के अनुसार अर्थ अलग-अलग हो सकते हैं (जैसे घर चलने का समय)।

बोर्ड परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न:

1. अभिधा और लक्षणा शब्द-शक्ति में कोई दो अंतर स्पष्ट कीजिए।
2. "वह तो निरा बैल है" - इस वाक्य में कौन सी शब्द-शक्ति है और क्यों?
3. व्यंजना शब्द-शक्ति की सोदाहरण परिभाषा लिखिए।